International Journal of Multidisciplinary Trends

E-ISSN: 2709-9369
P-ISSN: 2709-9350
www.multisubjectjournal.com
IJMT 2022; 4(1): 133-136
Received: 03-10-2021
Accepted: 19-11-2021

सतीश चन्द्र
शोध छात्र–भूगोल विभाग श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल टिबडे बाला विश्वविद्यालय, विद्यानगरी, झुंझुनूं राजस्थान, भारत

डॉ. जयदेव प्रसाद शर्मा
असोशियेट प्रो0– भूगोल विभाग श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल टिबडे बाला विश्वविद्यालय, विद्यानगरी, झुंझुनूं राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
सतीश चन्द्र
शोध छात्र–भूगोल विभाग श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल टिबडे बाला विश्वविद्यालय, विद्यानगरी, झुंझुनूं राजस्थान, भारत

जनसंख्या के सामाजिक–आर्थिक स्वरूप का विश्लेषण जनपद अम्बेडकरनगर

सतीश चन्द्र, डॉ. जयदेव प्रसाद शर्मा

DOI: https://doi.org/10.22271/multi.2022.v4.i1c.141

प्रस्तावना

सांस्कृतिक भू–दृश्य का सृष्टा 'मानव' भौगोलिक तत्व,संसाधन एवं कारक तीनों है। ये स्वमयेव एक महत्वपूर्ण संसाधन होते हुए भी प्रत्येक संसाधन के उपयोग का केन्द्र बिन्दु है। आदि काल से ही यह संसाधन,जिसे जनसंख्या कहा गया,मानव चिन्तनधारा का एक प्रमुख विषय रहा है क्योंकि जनसेख्या के विभिन्न गुणात्मक एवं परिणामात्मक विशेषताओं का प्रभाव किसी क्षेत्र विशेष के सामाजिक एवं आर्थिक भूदृश्य पर पड़ता है। इन्हीं भौगोलिक, सामाजिक एवं आर्थिक कारकों के कारण ही इन तत्वों के भौगोलिक वितरण में विविधता मिलती है। अतः सांस्कृतिक परिवेष के शीर्षस्थ कारक 'मानव संसाधन'की संरचनात्मक विविधताओं के कारण परोक्ष रूप से आर्थिक संसाधनों के रूपान्तरण एवं अनुकूलन में अन्तर के कारण क्षेत्रीय विकास में भी विभिन्नता मिलती है।

भारतीय विकासशील अर्थ–व्यवस्था में जहां 80 प्रतिशत ग्रामीण लोग कृषि एवं तत्सम्बन्धी कार्यों में लगे हैं तथा राष्ट्रीय आय का 37 प्रतिशत कृषि से प्राप्त होता है जिसमें 33 प्रतिशत श्रमिक कृषि अथवा उससे सम्बन्धित आर्थिक कार्य–कलापों में सेवारत हैं। इस सन्दर्भ में ग्रामीण विकास का अध्ययन स्पष्ट रूप से महत्वपूर्ण हो जाता है। ऐसी आर्थिक व्यवस्था में विपन्न जनसंख्या अधिकतर ग्रामीण क्षेत्रों में ही पायी जाती है जिसके जीवन–यापन के स्तर में सुधार तथा विकास प्रक्रिया में इस जनसंख्या की सक्रिय भूमिका ग्रामीण विकास के मुख्य उद्देश्य एवं उससे सम्बद्ध कार्यक्रमों की सफलता हेतु अनिवार्य तत्व माने गये हैं। 'भारत' भी एक विकासशील राष्ट्र है, यहां सामाजिक, आर्थिक व्यवस्था को गति प्रदान करने के उद्देश्य से क्रियान्वित विभिन्न कार्यक्रमों तथा प्रयासों में विभिन्न समस्यायें स्वाभाविक रूप से उत्पन्न हुई है जिनका विश्लेषण अनेक तथ्यों को उजागर करता है। जैसे– समन्वय के आभाव में विकास प्रक्रिया ने विषमता को जन्म दिया जिसके फलस्वरूप समाज में सामाजिक, आर्थिक एवं क्षेत्रीय विषमतायें अपेक्षाकृत अधिक प्रखार हुई। अतः ग्रामीण विकास की संकल्पना न केवल कृषि उत्पादकता में वृद्धि अपितु ग्रामीण समाज के सर्वांगीण विकास से सम्बन्धित है। वैज्ञानिक तकनीकों के अलावा किसी भी क्षेत्र का विकास प्रधान रूप से वहाँ के भौतिक पर्यावरण या प्राकृतिक परिवेश पर निर्भर करता है। मानवीय क्रिया–कलापों के लिए भौतिक परिवेश एक कार्यक्षेत्र प्रस्तुत करता है; फलतः भौगोलिक जगत में प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक क्रियाओं के वितरण में भौतिक परिवेश का प्रभाव विशेष महत्वपूर्ण है। यद्यपि भौतिक संसाधन की मात्रा और गुणवत्ता मानवीय नियन्त्रण के परे हैं, तथापि विकास कार्यों एवं योजनाओं के निर्धारण तथा सम्पादन के लिए अध्ययन क्षेत्र में भौतिक स्वरुप के प्रभाव का विश्लेषण परमावश्यक है। मानवीय क्रिया–कलापों के परिप्रेक्ष्य में भौतिक परिवेश के प्रभाव को कभी नकारा नहीं जा सकता क्योंकि संसाधन–उपयोग–प्रतिरूप में इसका सीधा प्रभाव परिलक्षित होता है। आधुनिक युग में नये–नये अत्याधुनिक उपकरणों, प्रभावशाली उर्वरकों तथा रासायनिक तत्वों के आविष्कार के फलस्वरुप भूमि प्रदेशों एवं अन्य भौतिक तत्वों के प्राकृतिक स्वरुप को अनुकूल बनाया जा रहा है। उदाहरण स्वरुप– ऊसर सुधार हेतु ''पाइराइट'' तथा जलवायविक प्रतिकूलताओं से बचने के लिए ''कांचगृह'' (ळतममद भ्वनेमद्ध का आविष्कार किया गया है, परन्तु इनमें आंशिक सफलता ही मिल पायी है। शोध–क्षेत्र के रूप में उत्तर प्रदेश का सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं प्राकृतिक समस्याओं से ग्रस्त अम्बेडकरनगर जनपद चुना गया है। यहाँ अर्न्तक्षेत्रीय असन्तुलन के कारण विकास स्तर बहुत निम्न है। इस क्षेत्र के भौतिक संसाधनों का स्थानीय मूल्यांकन बहुत दिनों तक अपूर्ण रहा और अब, जब नवीन योजनाओं के माध्यम से उसका मूल्यांकन हुआ तो उपभोग सम्बन्धी दोष सामने आ रहें है। प्रस्तुत अध्ययन में ''संविकास–नियोजन'' की दृष्टि से अध्ययन क्षेत्र के भौतिक वातावरण के विभिन्न तत्वों का अध्ययन संसाधन के रूप में किया गया है, जिससे उनका अधिकतम् उपयोग क्षेत्र–विकास की स्थिति–निर्धारण में किया जा सके।

स्थिति एवं विस्तार

अध्ययन क्षेत्र उत्तर प्रदेश के अयोध्या मण्डल का नवगठित अम्बेडकर नगर जनपद है।

यह पहले फैजाबाद जनपद का ही एक अंग था। फैजाबाद जनपद का नाम वर्तमान में अयोध्या जनपद हो गया है। 29 सितम्बर 1995 ई0 को फैजाबाद की तीन तहसील अकबरपुर, टाण्डा तथा जलालपुर को संयुक्त करके उ0प्र0 के 67वें जनपद के रूप में इसका गठन हुआ। बाद में आलापुर तहसील के गठन के बाद इस जनपद में कुल चार तहसीलें हो गयीं। टोंस नदी के दोनों किनारों पर बसा अकबरपुर नगर जिला मुख्यालय है। जिले की उत्तरी सीमा पर बस्ती, पूर्वी सीमा पर आजमगढ़, दक्षिणी सीमा पर सुलतानपुर, पश्चिमी सीमा पर फैजाबाद जनपद है। जनपद का कुल क्षेत्रफल 2520 वर्ग किमी तथा जनसंख्या वर्ष 2001 के अनुसार 397040 है। यह जनपद कर्क रेखा के उत्तर 26030′ मिनट से 27025′ उत्तरी अक्षांश तथा 81040′ से 82054′ पूर्वी देशान्तर के बीच स्थित है। क्षेत्र का सम्पूर्ण भाग उपजाऊ है। अम्बेडकर नगर जनपद में विकास खन्ड की सं0 09,न्यायपंचायत 112, ग्राम सभा 805, आबाद ग्राम 1677, गैर आबाद ग्राम 105,तथा कुल ग्राामों की संख्या 1782 है।

तालिका 1: जनपद अम्बेडकर नगर का प्रशासनिक स्वरूप

क्र0सं0	विकास खन्ड	क्षेत्रफल वर्ग किमी0	ग्राम	राजस्व गाँव		
				कुल	आबाद	गैर आबाद
1	भीटी	215.0	180	180	174	6
2.	भियांव	216.4	143	143	140	3
3.	जलालपुर	289.6	169	169	168	1
4.	अकबरपुर	399.4	227	227	223	4
5.	कटेहरी	255.0	186	186	181	5
6.	टांडा	313.6	269	269	243	26
7.	जहांगीरगंज	208.7	260	260	235	25
8.	बसखारी	205.1	138	138	124	14
9.	रामनगर	221.3	210	210	189	21
	योगग्रामीण	2486.7	1782	1782	1677	105
	योगजनपद	2520.0	1782	1782	1677	105

जनपद अम्बेडकर नगर का सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक जीवन प्रमुखतया ग्रामीण मूल्यों, व्यवहारों एवं परम्पराओं पर निर्भर रहा। विभिन्न आधुनिक परिवर्तनों के बावजूद परम्परागत व्यवस्थाओं और मूल्यों की निरन्तरता आज भी अपनी पूर्ण जटिलता बनाये हुए है। इस प्रकार एक क्षेत्र विशेष के समग्र जीवन–यापन के ढंग को संस्कृति की संज्ञा प्रदान की जाती है। अभ्यास द्वारा भाषा, व्यक्तिगत आचरण एवं आदर्श जीवन–यापन के ढंग प्राविधिक आदि के सन्दर्भ में विकसित समानता तथा सरकार की नीतियाँ लोगों को एक सांस्कृतिक सूत्र में बाँधकर रखती है। व्यक्ति समाज की मूल इकाई हैं। वह कई प्रकार के व्यक्तिगत कार्य करता हैं, जो सामाजिक सन्दर्भ में प्रतिबन्धित होते हैं जबकि उसके कई कार्य तत्कालिक सामाजिक परिवेश में असंगत होते हुए भी दीर्घकालिक सामाजिक परिवर्तनों के परिचायक होते हैं। सामाजिक परिवेश और व्यक्तिगत कार्यो के मध्य इसी अन्योन्य क्रिया को सामाजिक व्यवस्था कहते है। सामाजिक व्यवस्था के अन्तर्गत समाज की संस्थाएं, परम्पराएं, रीति–रिवाज, साम्प्रदायिक व सांस्कृतिक मूल्य, विचार धाराएं, दृष्टिकोण, राजनीतिक एवं शिक्षण संस्थाएं, परिवार, कानून तथा व्यक्तिगत आचार–विचार सम्मिलित है। इस प्रकार ''किसी भी सामाजिक व्यवस्था या सामाजिक परिवेश में जो भीतरी स्थायी या अपेक्षाकृत स्थायी ढांचा विद्यमान होता है, उसे सामाजिक संरचना कहा जाता है।''

जाति व्यवस्था

जाति व्यवस्था भारतीय समाज की एक महत्वपूर्ण व्यवस्था है। यह न केवल हिन्दू समाज में पायी जाती है, बल्कि मुस्लिम व ईसाई समाजों में भी पायी जाती है। वर्ण व्यवस्था की परम्परा के अनुसार हिन्दू समाज मोटे तौर पर चार वर्गों में विभाजित है यथा ब्राह्मण (परम्परा से पुजारी एवं अध्येता) क्षत्रिय (शासक व सैनिक), वैश्य (व्यापार) शुद्र (श्रमिक तथा सेवक)। इनमें से प्रथम तीन द्विज है, क्योंकि इन जातियों के पुरुष जनेऊ धारण करने के अधिकारी है, जबकि शुद्र जनेऊ धारण नहीं करते हैं। प्रत्येक जातियों में जात्यान्तरिक वैवाहिक सम्बन्ध है। अन्तर्जातीय विवाह भी समाज में धीरे–धीरे प्रचलित हो रहा है। जाति व्यवस्था ग्राम या स्थानीय ग्राम समूहों में विभिन्न कार्य का आधार प्रस्तुत करती है, जो सामाजिक जीवन के लिए आवश्यक है। धार्मिक साहित्य में मनु ने भी मनुष्य की सृष्टि का वर्णन करते हुए विभिन्न जाति समूहों के निश्चित कर्तव्य व व्यवसाय बताया है। इस प्रकार स्पष्ट है कि प्रत्येक जाति का न केवल सामाजिक स्तर है, वरन् अपने विशिष्ट व्यवसाय है। एक व्यक्ति जिस जाति में जन्मता है, उसी में मरता है। उसके व्यक्तिगत प्रयास उसकी स्थिति को परिवर्तित नहीं कर पाते है। ''जाति यथार्थतः जीवन के सभी रूपों को शासित करती है।

जातियों का क्षेत्रीय प्रतिरूप

जाति व्यवस्था भारतीय समाज के लिए सबसे महत्वपूर्ण है। अम्बेडकर नगर जनपद में पायी जाने वाली जातियाँ वंश तथा कर्म के आधार पर निर्धारित है। जनपद में पायी जाने वाली मुख्य जातियाँ– ब्राह्मण, चमार, अहीर, पासी, कुर्म, राजदूत, लोध, कोइरी, शेख, मुराव, कहार, गड़ेरिया, कायस्थ, मल्लाह, मुस्लिम आदि है। अध्ययन क्षेत्र में जातियों का क्षेत्रीय वितरण सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक दशा को विशेष रूप से प्रभावित करता है। यद्यपि समाज के विकास एवं आधुनिकीकरण के कारण विभिन्न जातियों की सामाजिक क्रियाओं का क्षेत्र (राजनैतिक, आर्थिक व सामाजिक) परिवर्तन हो रहा है, किन्तु विलुप्त नहीं हो रहा है। अम्बेडकर नगर जनपद में जातियों का क्षेत्रीय वितरण प्रतिरुप एवं सामाजिक संरचना की विस्तृत अध्ययन के लिए गाँव पहितीपुर, हजपुरा, सिकन्दरपुर, सकरा, तथा खजुरी का व्यक्तिगत जातीय सर्वेक्षण किया गया तथा पाया गया कि चमार जाति प्रायः सभी सर्वेक्षित गाँवों में निवास करती है। सर्वेक्षण से पता चलता है कि अम्बेडकर नगर जनपद के सर्वेक्षित ग्रामों पहितीपुर (13.18 प्रतिशत), हजपुरा (13.15 प्रतिशत), सिकन्दरपुर (16.15 प्रतिशत), सकरा (18.35 प्रतिशत), खजुरी (8.35 प्रतिशत) चमारों की संख्या सर्वाधिक है तथा सबसे कम कायस्थ जाति पहितीपुर में (0.85 प्रतिशत), हजपुरा (0.95 प्रतिशत), सिकन्दरपुर (0.35 प्रतिशत), सकरा (0.85 प्रतिशत), खजुरी (0.35 प्रतिशत) पायी जाती है ।

तालिका 1: अम्बेडकर नगर जनपद में जातिगत संरचना प्रतिशत में (2021)

क्रम	जाति	पहितीपुर	हजपुरा	सिकन्दरपुर	सकरा	खजुरी
1.	ब्राह्मण	14.64	14.53	10.53	7.45	3.25
2	चमार	13.81	13.15	16.15	18.35	8.35
3	अहीर	11.84	11.65	14.25	6.05	5.45
4	पासी	5.56	5.35	2.40	10.15	12.18
5	कुर्मी	2.60	2.75	0.95	2.15	7.28
6	क्षत्रिय	7.00	6.85	8.65	8.10	8.15
7	लोध	3.84	3.80	3.15	3.15	2.18
8	कोइरी	3.47	3.78	5.65	3.25	3.27
9	शेख	0.95	1.22	1.30	3.86	8.65
10	मुराव	1.38	0.48	2.00	2.15	4.35
11	कहार	1.92	1.98	2.85	1.65	2.10
12	गड़ेरिया	2.28	2.65	4.65	3.15	1.85
13	कायस्थ	0.85	0.95	0.35	0.85	0.35
14	मल्लाह	1.60	2.15	5.15	3.25	3.45
15	मुस्लिम	4.03	3.45	1.15	4.15	14.26
	अन्य	24.29	25.26	20.85	22.29	24.88

स्रोतः व्यक्तिगत सर्वेक्षण 2021।

क्षेत्रीय कार्यात्मक स्वरुप

सामान्यतया अम्बेडकर नगर जनपद के गाँवों में विभिन्न उद्योग–धन्धों को भिन्न–भिन्न जातियों के लोग परम्परागत रूप से करते आ रहें है। यथा– धोबी, नाई, बढ़ई, लुहार, कुम्हार, तेली, वारी, कहार, चमार, ब्राह्मण आदि। गाँव में जाति प्रणाली के इस आर्थिक पहलू की अभिव्यक्ति यजमानी व्यवस्था में होती है। इस प्रथा के अन्तर्गत कुछ जातियाँ दूसरी जाति के लोगों से अपनी कुछ सेवाएं कराने की आशा करते है। जैसे– बढ़ई, लोहार, किसान के यन्त्र बनाता है, नाई बाल काटता है, धोबी कपड़ा धोता है, ब्राह्मण पूजा–पाठ, विवाह व मृत्यु संस्कार प्रायः सभी जातियों में करवाता है। निम्न जाति का निर्धन व्यक्ति प्रभुत्व सम्पन्न कृषक जाति के यहाँ हलवाह (जो कृषि कार्य करता है) के रूप में रहता है। कहार पानी भरता हैं। आदि जातिगत आर्थिक पहलू की अभिव्यक्ति व्यवस्था से परिलक्षित होता हैं।

जातियों की व्यवसायिक संरचना

ग्रामवासियों की आर्थिक व्यवसाय कृषि कार्य एवं व्यवसायिक विशेषीकरण तथा आत्म निर्भरता पर ही मुख्यतः निर्भर है। उदाहरण के लिए कृषि कार्य मुख्य रूप से ब्राह्मण क्षत्रिय, अहीर, कुर्मी आदि करते है। अन्य जातियाँ कृषि तथा मजदूरी पेशे में अपना भरण–पोषण करते हैं। व्यापार एवं व्यवसाय मुख्यतः तेली, कलवार, बनिया आदि करते है। नौकरी पेशे में ब्राह्मण, क्षत्रिय एवं कायस्थ मुख्य रूप से संलग्न थे, परन्तु अब अन्य जातियों के लोग भी इस कार्य को कर रहें है। मजदूरी का कार्य चमार, खटीक, धरकार आदि जातियाँ करती है।

अम्बेडकर नगर जनपद में आज भी जातिगत, परम्परागत व्यवसाय अथवा कार्य करते रहते हैं। जैसे– ब्राह्मण पूजा–पाठ, पौरिहित्य करने के साथ–साथ अपनी निजी भूमि पर खेती करते हैं तथा नौकरी में भी संलग्न है। कुम्हार, नाई, धोबी, तेली, बढ़ई, लोहार, चमार आदि जातियाँ भी अपने परम्परागत व्यवसाय से जुड़े रहने के साथ–साथ गांव के कृषकों के यहाँ खेती एवं खलिहानों में फसल की बुवाई एवं कटाई करते हैं। वर्तमान समय में उच्च जीवन स्तर की चाह में नगरों की तरफ ग्रामीण जनसंख्या के स्थानान्तरण से गांवों में कृषि श्रमिक की काफी कमी हो गयी है, जिसके कारण लोगों का तृतीय व्यवसायों की तरफ ध्यान आकर्षित हो रहा है।

जातिगत नियमों के पालन में शिथिलता

यद्यपि जातिगत भावना प्रबल हुई है तथापि जातिगत नियमों के पालन की कठोरता में शिथिलता आती जा रही। यह शिथिलता ग्रामों के अध्ययन मे मुख्यतः खान–पान एवं आचार विचार तथा व्यवहार सम्बन्धी नियमों में विशेष रूप से दृष्टिगत हुआ है। उदाहरण के लिए किसी भी जाति होटल में भोजन ग्रहण करने के पूर्व भोजन बनाने अथवा परोसने वाले जाति सुनिश्चित करने तथा अपने से छोटी जाति वाले व्यक्ति को अपने घर अलग थाली में भोजन कराने आदि जैसे वाले मे शिथिलता आती जा रही है। वर्तमान राजनैतिक एवं सामाजिक परिवेश में अब उच्च जाति वाले (कतिपय रूढिवादी गोत्रों विशेषकर ब्राहमणों में बड़े–बूढो को छोड़कर) अपने घर किसी भी जाति के व्यक्ति को थाली मे भोजन कराते है। ब्राहमण किसी निम्न जाति (अनुसूचित जाति को छोड़कर) के यहाँ उच्च जाति यथा ब्राहमण द्वारा बनाया गया भोजन करते है। अम्बेडकर नगर जनपद में लगभग सभी जातियाँ अपने से निम्न जाति के लिए इस नियम का पालन करती है। फिर भी ऐसे नियम ग्रामीण क्षेत्रों तक सीमित है। ग्रामीण क्षेत्रों की सभी जातियाँ चाहे उच्च हो या निम्न, शहर मे जाने पर खान–पान सम्बन्धी वर्जनाओं का उलंघन करती है। दूसरा महत्वपूर्ण परिवर्तन लोगो के आचार–व्यवहार में भी दृष्टिगत हुआ है। अपने से निम्न जाति वाले व्यक्ति के साथ आसन पर नही बैठते थे तथा उच्च जाति के व्यक्ति आने पर आसन छोड़ दिया जाता था परन्तु आज इसमें शिथिलता आ रही है। आर्थिक स्थिति की बिगड़ती दशा नगरीकरण, शिक्षा में प्रगति आदि जैसी क्रियाओं ने उच्च जातियों की सामाजिक मान–प्रतिष्ठा को अधिक प्रभावित किया है। फलस्वरुप जातिगत कठोर नियमों का पालन में शिथिलता आती जा रही हैं।

जातियों की गतिशीलता

आज सबसे ऊँची जातियां और नीची जातियां तो प्रायः निश्चित ही हैं, लेकिन दोनों विन्दुओं के बीच उतार–चढ़ाव, शिथिलता एवं परिवर्तन होने लगा है। ये परिवर्तन दशकों में आयें है और आज भी सक्रिय है। जाति से तात्पर्य आस–पास के कुछ गांवों में रहने वाले सगोत्री, सजातीय एवं रिश्तेदारों से होता है। पहले की भांति जाति आज भी आन्तरिक विवाह, पद्धति में बंधें हैं। जाति पारम्परिक धर्म का एक अंश और उसी से अंनुशासित है। समाज में संयुक्त परिवार तथा जाति से व्यक्ति को कतिपय ऐसे लाभ मिल जाते हैं जो औद्योगिक रूप में विकसित पश्चिम के देशों में किसी को नहीं मिलती है। शिक्षा, नौकरी तथा सामाजिक–आर्थिक क्षेत्रों में जातिगत आरक्षण से जातिवाद की भावना अत्यधिक प्रबल हुई है। जातिगत आरक्षण यथा अनु0जाति एवं जनजाति व पिछड़े वर्गों के आरक्षण तथा राजनीतिक क्षेत्र में जातिवाद प्रवेश कर जाने तथा साथ ही राजनैतिक नेताओं द्वारा जाति विशेष के मांगों के सन्दर्भ में दिये जाने वाले भाषण अन्तर्जातीय, विद्वेश को बढा रहे है। इस प्रकार जहाँ जातिवाद समाप्त करने की बात की जाती है, वही व्यवहारिक जगत मे जातिवाद की प्रबल भावना बढती जा रही है।

जातीय छुआछूत व अपवित्रता की भावना में बदलाव

छुआछूत का विचार हिन्दू समाज में एक अजीब रूप में रहा है। ग्रामीण लोगों में परस्पर व्यवहार में ऊपर से भाई चारा, सौहार्द और सहानुभूति दिखाई देती है, लेकिन छुआछूत ऊँच–नीच के सांस्कृतिक कारण उनके व्यवहार को बहुत अधिक प्रतिबन्धित कर रही है। क्षेत्रीय अध्ययन में ज्ञात हुआ कि ऊँची जातियों के लोग पबित्रता और अपबित्रता के परम्परागत विचारों से प्रेरित होने के कारण नीची जातियों के यहाँ का पका हुआ भोजन नहीं ग्रहण करते हैं, जबकि इन्हीं जातियों के यहाँ का दाल, चावल, घी, मिर्च, मसाला आदि कच्चे पदार्थ के रूप में लेने पर किसी ब्राह्मण को कोई आपत्ति नहीं होती है, जबकि होटल व चाट की दुकानों पर ये इस नियम का पालन नहीं करते हैं और गांवों में इसका पूरा निर्वाह करते हैं। इस सन्दर्भ में उच्च जातियों के नवयुवकों में जो शिक्षा प्राप्त कर रहें है या नौकरी पर है ऐसा करने में असमर्थ हैं। अतः स्पष्ट है कि ऊँच–नीच, पवित्रता–अपवित्रता की भावना सामाजिक प्रतिष्ठा व स्थिति का दबाव है न कि आन्तरिक रूप से। वर्तमान समय में विशेषकर अस्पृश्यता के सम्बन्ध में कठोर प्रतिबन्ध शिथिल पड़ गये है। फलतः जातीय छुआछूत व अपवित्रता की भावना में ह्रास हो रहा है। यह भावना सांस्कृतिकरण की क्रिया का परिणाम है।

जातियों में व्यवसायिक गतिशीलता

अम्बेडकर नगर जनपद की सामाजिक संरचना में परिवर्तन के परिणाम स्वरूप विभिन्न जातियां अपने परम्परागत पेशे को त्यागकर नयी आर्थिक गतिविधियों की ओर आकर्षित हो रही हैं। जनपद के क्षत्रिय व ब्रह्मण जातियों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि ब्रिटिश काल में जमींदारी प्रथा के परिणाम स्वरूप ये जातियां स्वयं कृषि कार्य नहीं करती थी। किन्तु पारिवारिक वृद्धि एवं जमींदारी उन्मूलन से कृषि की ओर आकर्षित हुई और कुछ दशकों से ही इन जातियों के शत–प्रतिशत परिवार कृषि कार्य करते आ रहें है। आज से कुछ दशकों पूर्व ब्राह्मण परिवारों के

शत–प्रतिशत परिवार जहां अपना परम्परागत व्यवसाय (पुरोहित व पण्डिताई) करते थे, वहां आज मात्र कुछ परिवार ही इस व्यवसाय को करते हैं। वर्तमान समय में ये जातियां कृषि और नौकरी, व्यापार की ओर अधिक उन्मुख हो रहीं है। आज क्षेत्र की ब्राह्मण व क्षत्रिय जातियां अपने हाथ से हल चलाने में भी कोई संकोच नहीं करती है। उल्लेखनीय है कि निम्न जातियों को भूमिहीन होने के कारण जबरन धनी लोगों के घर पर सेवा कार्य नगण्य या मामूली मजदूरी पर करना पड़ता था। साथ ही उनके व्यवसाय को कोई सामाजिक सम्मान प्राप्त नहीं था। उन्हें यजमानी व्यवस्था के अधीन वर्षभर अपने यजमानों के घर पर या खेतों में कड़ी मेहनत या मजूदरी करनी पड़ती थी। किन्तु राजनैतिक चुनाव में इनके प्रतिनधि के चुनकर विधान मण्डलों एवं सांसद में जाने से इन्हें वर्तमान समय में बहुत सी संवैधानिक सुविधाएं प्रदान की गयी है। जिससे इनके सामाजिक जीवन में काफी परिवर्तन हुए है। वे फलतः मजदूरी व्यवसाय की प्रवृत्ति अपेक्षाकृत कम होती जा रही है, जिसका प्रमुख कारण भूमि प्राप्ति, बाहर नगरों में नौकरी का अवसर, सरल किस्तों पर ऋण की सुविधा, चाय–पान की दुकान खोलना, नरेगा योजनान्तर्गत कार्य उपलब्ध आदि उत्तरदायी कारक हैं।

गांवों का संगठनातमक स्वरूप

अम्बेडकर नगर जनपद में परम्परागत सामाजिक व्यवस्था के अन्तर्गत गांवों में आपसी संगठन के लिए जातीय पंचायतें, जो विशेष जाति के लोगों के कुछ गांवों को मिलाकर बनायी जाती है, जो उस जाति विशेष की समस्याओं का समाधान करने का प्रयास करते हैं। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात ग्रामीण संगठन में भी कई परिवर्तन हुए हैं। अम्बेडकर नगर जनपद की परम्परागत सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन की प्रवृत्ति अन्तः ग्रामीण संगठन के बदलते स्वरूप में भी दृष्टिगत होने लगी है। उल्लेखनीय है कि जातीय पंचायतों का महत्व अब सिर्फ निम्न एवं पिछड़ी जातियों में ही रह गयी है तथा इसमें भी शिथिलता आती जा रही है। जबकि उच्च जातियां इनके निर्णयों के पूर्व अवहेलना कर रही है। फलस्वरूप जातीय पंचायतों एवं अन्तर्ग्रामीण संगठन के मुकदमें सरकारी न्यायालयों में ले जाने की प्रवृत्ति अधिक बढ़ती जा रही है। इस प्रकार स्पष्टतः अम्बेडकर नगर जनपद में अनेक सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक तथा नैतिक एवं ऐतिहासिक परिवर्तन हुए हैं।

सांस्कृतिक परिवर्तन में आचार, व्यवहार, खान–पान, रहन–सहन आदि सामाजिक व्यवस्था एवं सांस्कृतिक मूल्यों में परिवर्तन निरन्तर होते रहे हैं। सामाजिक व्यवस्था के अन्तर्गत समाज की संस्थाएं, परम्परा, रीति–रिवाज, सामाजिक व सांस्कृतिक मूल्य, विचार धारायें, राजनैतिक एवं शिक्षण संस्थाओं का स्वरूप, परिवार तथा व्यक्तिगत आचार–विचार सम्मिलित हैं। अम्बेडकर नगर जनपद की सामाजिक–आर्थिक संरचना में परिवर्तन के आयाम जुड़े हुए है। यद्यपि आज भी परम्परागत पारिवारिक व्यवसाय से सम्बन्धित लोगों के मुख्य पेशों में निरन्तरता बनी हुई है। तथापि मशीनीकरण के प्रभाव, शिक्षा में विकास, बाहर नौकरी के सुअवसर, जनसंख्या वृद्धि से भरण–पोषण के लिए अप्राप्य आय आदि कारणों से इनमें शिथिलता दृष्टिगत होने लगी है। पारिवारिक अखण्डता एवं सशक्ति पर भी उक्त कारणों के प्रभाव से इनके ढ़ाचें में भी काफी परिवर्तन हुआ है। जनपद के ग्रामों में भी विद्युतीकरण से सिंचाई की सुविधा तथा संचार सुविधाओं में वृद्धि से लोगों के व्यक्तिगत जीवन स्तर मे सुधार हुआ है। फिर भी अशिक्षा, निर्धनता, रूढ़िवादी विचारों से ग्रसित ग्रामों की सामाजिक–आर्थिक, सामाजिक संरचना में परिवर्तन की गति बहुत ही मन्द है। अतः इसके लिए पर्याप्त सुधार एवं विकास की तीव्र प्रक्रिया की महती आवश्यकता है।

सन्दर्भ

1. सांख्यिकी पत्रिका, जनपद अम्बेडकर नगर (2019–20)।
2. प्रो0 जगदीश सिंह, सामाजिक संरचना एवं सामाजिक परिवर्तन, उत्तर भारत भूगोल पत्रिका,।
3. सिंह, संतोष कुमार, अवस्थापनात्मक तत्वों का भू–वैन्यासिक संगठन एवं ग्रामीण विकासः इलाहाबाद जनपद का एक अध्ययन।
4. सिह, करुणा निधान, जौनपुर जनपद के ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यावरणीय ह्रास, एक भौगोलिक अध्ययन, 2001।
5. बेचन एवं सिंह, मंगला समन्वित ग्रामीण विकास, जीवनधारा प्रकाशन, वाराणसी।
6. सिंह, संतोष कुमार, अवस्थापनात्मक तत्वों का भू–वैन्यासिक संगठन एवं ग्रामीण विकासः